SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-02, December- 2024
www.shikshasamvad.com

हिन्द महासागर में चीन की बढ़ती सामरिक गतिविधियां एवं भारत की सामुद्रिक सुरक्षा चुनौतियां

डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव
नेट, पी–एच० डी०
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग

तृप्ति साहू
(शोधार्थी)
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग
डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय,
अयोध्या–फैजाबाद

सारांश

सामुद्रिक शक्ति–सामुद्रिक संचार एवं परिवहन की स्वतन्त्रता पर जोर द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से ही अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण हिन्द महासागर विश्व की राजनीतिक, आर्थिक, एवं सामरिक गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है। अपनी महत्त्वपूर्ण केन्द्रीय भू–रणनीतिक कारणों से ही हिन्द महासागर विश्व की अर्थव्यवस्था और सुरक्षा के लिए एक महत्त्वपूर्ण सामुद्रिक गलियारे के रूप में पूर्व और पश्चिम अर्थात् प्रशान्त और अटलांटिक महासागर को जोड़ता है। अतएव भारत और पश्चिमी राष्ट्रों की राजनीतिक, आर्थिक, रणनीतिक एवं सुरक्षा गतिविधियों के लिए हिन्द महासागर क्षेत्र जितना महत्त्वपूर्ण है उतना ही चीन के राष्ट्रीय और सुरक्षा हितों के लिए भी है। हिन्द महासागर क्षेत्र वैश्विक राजनीति और व्यापार के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में खड़ा है, और इस संदर्भ में भारत की भूमिका तेजी से महत्वपूर्ण है। भारत की समुद्री रणनीति क्षेत्रीय सहयोग, आर्थिक हितों और राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं के बीच एक नाजुक संतुलन अधिनियम से प्रभावित है। तथा इसके अलावा, भारत के सामने चुनौतियां, जिसमें भू–राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता, समुद्री विवाद और लगातार बदलती वैश्विक व्यवस्था शामिल हैं। यह भारत के लिए उभरती चुनौतियों का प्रभावी ढंग से जवाब देने और हिंद महासागर द्वारा प्रस्तुत अवसरों को भुनाने के लिए अपनी समुद्री नीतियों को अनुकूलित करने की आवश्यकता पर जोर देता है।

मुख्य शब्द– *समुद्री गतिविधियाँ, बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव, समुद्री आतंकवाद, समुद्री डकैती, समुद्री विवाद सागर पहल, क्षेत्रीय सहयोग, संयुक्त नौसैनिक अभ्यास, समुद्र निगरानी प्रणाली, समुद्री रणनीति।*

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही महासागर अपने भरपूर आर्थिक स्रोतों एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य सम्पर्क के सुगम माध्यम के कारण दुनिया की शक्तियों के मध्य विवादों एवं राजनीतिक हितों का केन्द्र बिन्दु रहा है। जब हम महासागरों के मुख्य पहलुओं और निकटवर्ती क्षेत्रों के साथ इसके सम्बन्धों पर विचार करते हैं, तो विश्व राजनीति में महासागरों की अहम भूमिका नजर आती है। हिन्द महासागर दुनिया का अकेला ऐसा महासागर है, जिसका नाम किसी देश के नाम पर पड़ा है। इस महासागर की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियाँ सभ्यता के प्रारम्भिक काल से ही भारतीय उपमहाद्वीप से जुड़ी है। मानव के रूप में वैश्विक स्वरूप का प्रबल प्रभाव भू–राजनीति में स्पष्ट रूप में परिलक्षित होता है।

हिन्द महासागर की कुल तटरेखा का 12.5 प्रतिशत भाग भारतीय तट रेखा है। हिन्द महासागर में भारत के लगभग 1197 द्वीप है। इनकी सुरक्षा और विकास का उत्तरदायित्व भारत पर है। भारत का लगभग 97 प्रतिशत अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार हिन्द महासागर के मार्ग से होता है। भारत का समुद्री क्षेत्र लगभग 2.02 मिलियन वर्ग किमी० है। इसका आर्थिक दोहन हिन्द महासागर की शक्ति पर निर्भर करता है।

प्रायद्वीपीय भारत का इतिहास प्राचीन काल से ही हिन्द महासागर से प्रभावित होता रहा है, क्योंकि तीनों ओर से घिरे होने के कारण अपने सामुद्रिक व्यापार हेतु इसी महासागर पर अवलम्बित है। वास्तव में, क्राइस्टोफर कोलम्बस के अटलांटिक महासागर पार करने के कई शताब्दियों पूर्व ही हिन्दमहासागर पूर्व में चीन और पश्चिम में भूमध्यसागरीय देशों को जोड़कर वाणिज्य व सांस्कृतिक आदान–प्रदान करने की महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता रहा है। लेकिन कालान्तर में भारत के हिन्दू–शासकों के कमजोर पड़ने के कारण आगे चलकर अलग–अलग समयों में अलग–अलग शक्तियों ने संघर्ष करके अपना एकाधिकार भारत के सीमावर्ती सामुद्रिक क्षेत्रों पर स्थापित कर लिया। इनमें सबसे प्रमुख था ब्रिटेन, जिसने फ्राँसीसियों को 1803 ई० में 'ट्रेफाल्गर' की निर्णयात्मक लड़ाई में हराकर सम्पूर्ण हिन्द महासागर पर नियन्त्रण कर इसे ब्रिटिश झील के रूप में परिवर्तित कर दिया। किन्तु द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् मलाया को छोड़कर सम्पूर्ण एशिया से अपने साम्राज्य को ब्रिटेन द्वारा समेट लेने से जो रिक्तता हिन्दमहासागरीय क्षेत्र में उत्पन्न हुई, उसे भारत, श्रीलंका व पाकिस्तान जैसे नवोदित राष्ट्र पूरा करने में अक्षम थे। जिसके कारण इस क्षेत्र में अमेरिका रूस व फ्राँस जैसी महा शक्तियों व चीन जैसे 'महाशक्ति की आकांक्षा' रखने वाले राष्ट्र को प्रवेश करने का अवसर प्राप्त हुआ। उससे सम्पूर्ण हिन्दमहासागरीय क्षेत्र की शान्ति व स्थिरता के लिए गम्भीर संकट पैदा हो गया। समुद्र पर अधिकार करने वाला देश आंशिक रूप से स्थल पर भी अधिकार करने में समर्थ होता है। ''He, who rules on the Sea, well shortly rule on land also.'' यदि देखा जाए तो इस कथन पर औरों की अपेक्षा कहीं अधिक अमल यदि कोई कर रहा है तो वो है 'चीन'। जो अपनी विस्तारवादी एवं साम्यवादी नीतियों के सहारे वैश्विक पटल खुद को 'एक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने के सपने को पूरा करने की राह पर अग्रसर है। चीन की यही आकाँक्षा भारत के 6100 कि० मी० लम्बी सामुद्रिक सीमाओं की सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा है अपेक्षाकृत हिन्द महासागर में उपस्थित अन्य शक्तियों के।

भारत का रणनीतिक दृष्टिकोण लंबे समय से महाद्वीपीय चुनौतियों, खासकर पाकिस्तान और चीन से चुनौतियों पर केंद्रित रहा है, जिससे समुद्री चिंताओं को पीछे धकेल दिया गया है। हालांकि, हिंद महासागर क्षेत्र, जिसे नई दिल्ली ने पारंपरिक रूप से अपने प्रभाव क्षेत्र का हिस्सा माना है, एक बहुत बड़ी रणनीतिक प्राथमिकता बन रहा है, खासकर जब इस क्षेत्र में चीन का प्रभाव बढ़ रहा है।

आमतौर पर यह समझा जाता है कि हिंद महासागर क्षेत्र में भूमि और महासागरीय क्षेत्र शामिल है जो पूर्व में मलक्का जलडमरूमध्य से लेकर पश्चिम में मोजाम्बिक चौनल तक फैला हुआ है तथा इसमें अरब सागर, बंगाल की खाड़ी, अदन की खाड़ी, फारस की खाड़ी, लाल सागर और 33 तटीय देश शामिल हैं जिनकी सम्मिलित जनसंख्या लगभग 2.9 बिलियन है।

इस क्षेत्र का महत्व इसके महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों में निहित है जो महासागरों के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की अनुमति देते हैं और 'रणनीतिक राजमार्गों' के रूप में कार्य करते हैं। ये मार्ग – जिन्हें समुद्री संचार रेखाएँ कहा जाता है – मध्य पूर्व, दक्षिण पूर्व एशिया, पूर्वी एशिया, यूरोप और अमेरिका को जोड़ते हैं और वैश्विक आर्थिक सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। आज इस क्षेत्र में रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता SLOCs के साथ महत्वपूर्ण चोकपॉइंट्स के पास सैन्य और रणनीतिक प्रभुत्व बनाए रखने के इर्द–गिर्द घूमती है, जहाँ राष्ट्र दूसरों को मुक्त नेविगेशन की सुरक्षा या इनकार करने के लिए संघर्ष करते हैं।

भारत के लिए हिंद महासागर क्षेत्र रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका लगभग 80 प्रतिशत कच्चा तेल और 95 प्रतिशत व्यापार (मात्रा के हिसाब से) समुद्र और महासागरों के माध्यम से होता है। इस क्षेत्र में चीनी बुनियादी ढांचे के निवेश, बंदरगाहों और सैन्य प्रतिष्ठानों में वृद्धि ने नई दिल्ली की असुरक्षा की भावना को बढ़ा दिया है और समुद्री व्यापार मार्गों से जुड़े पारंपरिक सुरक्षा अनिवार्यताओं और आर्थिक हितों के बीच घनिष्ठ संबंध को रेखांकित किया है।

चीन के लिए हिंद महासागर का महत्व

चीन तेज गति से विकास कर रहा है और इसके कच्चे तेल की माँग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। चीन दुनिया में कच्चे तेल का सबसे बड़ा आयातक है और प्रतिदिन करीब 10.5 मिलियन बैरल का आयात करता है। 5 प्रमुख आयात गंतव्य मध्य पूर्व और अफ्रीका हैं, जो चीन के आयात का लगभग 50 प्रतिशत आपूर्ति करते हैं। कच्चे तेल की माँग में वृद्धि और घरेलू उत्पादन में गिरावट के साथ, चीन को अपनी तेल माँगों को पूरा करने के लिए बाहरी स्रोतों की तलाश करनी पड़ रही है। 6 रणनीतिक दीर्घवृत्त वैश्विक कच्चे तेल का 70 प्रतिशत उत्पादन करते हैं और वहाँ के 14 में से 10 राज्य अस्थिर प्रकृति के माने जाते हैं, ऐसे में अपने तेल स्रोतों को सुरक्षित करना न केवल चीन के लिए, बल्कि किसी भी देश के लिए महत्वपूर्ण हो गया है। 7 चीन अपने तेल स्रोतों की रक्षा के लिए सहायता और निवेश नीतियाँ लेकर आया, 8 न केवल स्रोतों को सुरक्षित करना, बल्कि SLOCs भी एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया है, जिस पर चीन ने जिबूती में एक चीनी बेस की व्यवस्था के माध्यम से प्रतिक्रिया दी है और साथ ही SLOCs को सुरक्षित करने के लिए हिंद महासागर में विभिन्न नौसैनिक बलों को तैनात किया

है। लेकिन चीन के लिए, इसके भू–रणनीतिक स्थान और व्यापार के मार्गों ने एक और सुरक्षा मुद्दे को जन्म दिया है, ''मलक्का दुविधा''। हू जिंताओ द्वारा 2003 में गढ़ी गई, दुविधा चीन के लिए मलक्का जलडमरूमध्य के रणनीतिक महत्व और किसी विदेशी राष्ट्र के साथ मतभेद के समय चीनी आर्थिक मशीन को खराब करने की इसकी क्षमता पर प्रकाश डालती है। मलक्का जलडमरूमध्य चीन के लिए एक महत्वपूर्ण भू–रणनीतिक स्थान है क्योंकि इसका 60 प्रतिशत व्यापार जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है और 2016 में इसका लगभग 70 प्रतिशत कच्चा तेल इसी जलडमरूमध्य से होकर गुजरा इसके साथ ही, एक क्षेत्रीय खिलाड़ी के रूप में संयुक्त राज्य अमेरिका की उपस्थिति, वैश्विक शासन प्रणाली के सुधार में एक नेता के रूप में चीन की भूमिका को चुनौती दे रही है, जिससे सैन्य, राजनीतिक और आर्थिक सुरक्षा परिसरों की एक विस्तृत श्रृंखला उत्पन्न हुई है।

चीन और 'मोतियों की माला' सिद्धांत

वर्षों से, पाकिस्तान और चीन के साथ भारत के भूमि–सीमा संघर्षों ने एक प्रकार का '' महाद्वीपीय जुनून '' पैदा किया है, जिसने देश की सेना और वायु सेना को ऊंचा किया और इसकी नौसैनिक क्षमताओं को कुछ हद तक उपेक्षित कर दिया । हालाँकि, भारत के रक्षा उद्देश्यों का पुनः प्राथमिकताकरण लगभग एक दशक से चल रहा है, मुख्य रूप से इस क्षेत्र में चीन की बढ़ती उपस्थिति और प्रभाव के जवाब में। इसमें नौसैनिक ठिकानों और वाणिज्यिक सुविधाओं का नेटवर्क शामिल है जिसे चीन ने अपनी मुख्य भूमि को पोर्ट सूडान से जोड़ने के लिए बनाया है। यह नेटवर्क – जिसे 2005 के अमेरिकी रक्षा विभाग की रिपोर्ट में 'मोतियों की माला' के रूप में संदर्भित किया गया है – भारत और अन्य लोगों द्वारा समुद्री क्षेत्र में भारत को घेरने के रूप में माना जाता है।

जबकि बीजिंग ने घेराबंदी के सुझावों को सख्ती से खारिज किया है – एक विरोधी को सभी तरफ से अलग–थलग करने और घेरने की एक रणनीतिक रणनीति – अपने समुद्री 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' (BRI) के माध्यम से चीनी प्रभाव के प्रसार ने नई दिल्ली और कई पश्चिमी राजधानियों को 'घेरने' के खतरे को गंभीरता से लेने के लिए प्रेरित किया है। उदाहरण के लिए, भारत के छह दक्षिण एशियाई पड़ोसियों में से पांच BRI में शामिल हो गए हैं – बांग्लादेश, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका। नेपाल को छोड़कर ये सभी हिंद महासागर के राज्य हैं। बीजिंग ने बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में भी निवेश किया है और बांग्लादेश, मालदीव, म्यांमार, पाकिस्तान और श्रीलंका में बंदरगाहों का उपयोग करने की मांग की है। जबकि चीन द्वारा इन बंदरगाहों का उपयोग वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता हैं।

दक्षिण एशिया से परे, म्यांमार में क्यौकप्यू बंदरगाह के निर्माण में बीजिंग की भागीदारी से उसे बंगाल की खाड़ी में भारतीय नौसेना के पहले से निर्विवाद प्रभुत्व को चुनौती देने का मौका मिलेगा। नई दिल्ली पाकिस्तान में ग्वादर बंदरगाह के संभावित सैन्यीकरण और 2017 में अफ्रीका के हॉर्न पर जिबूती में चीनी सैन्य अड्डे की स्थापना से भी चिंतित है।

अंत में, बीजिंग ने हिंद महासागर के देशों तक अपनी कूटनीतिक पहुंच बढ़ा दी है और वह इस क्षेत्र के छह द्वीपीय देशों – कोमोरोस, मेडागास्कर, मालदीव, मॉरीशस, सेशेल्स और श्रीलंका – में से प्रत्येक में राजनयिक मिशन रखने वाली एकमात्र प्रमुख शक्ति है।

भारतीय सामुद्रिक चुनौतियां एवं रणनीति

भारत की समुद्री सुरक्षा चुनौतियाँ एक गंभीर और जटिल मुद्दा हैं, जो कई वैश्विक और क्षेत्रीय कारकों से प्रभावित हैं। हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की समुद्री सीमाएँ विश्व के सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्गों में से एक मानी जाती हैं, और इन मार्गों पर भारत का प्रभाव भी बढ़ रहा है। इसलिए, भारतीय नौसेना और समुद्री सुरक्षा एजेंसियों के लिए यह चुनौती और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

भारत को अपनी समुद्री सुरक्षा के लिए विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिनमें से सबसे प्रमुख हैं: चीन की बढ़ती समुद्री गतिविधियाँ, समुद्री आतंकवाद, समुद्री डकैती, और क्षेत्रीय तनाव। चीन ने अपनी नौसेना को हिंद महासागर में तेजी से मजबूत किया है, और इसके द्वारा किए गए निवेश तथा विस्तार ने भारत के लिए समुद्री सुरक्षा के जोखिमों को बढ़ा दिया है। चीन का 'बेल्ट और रोड इनिशिएटिव' (BRI) के तहत हिंद महासागर क्षेत्र में विभिन्न पोर्ट्स पर प्रभुत्व स्थापित करना भारत की सुरक्षा को चुनौती दे रहा है। खासतौर पर पाकिस्तान और श्रीलंका जैसे देशों में चीन के प्रभाव का बढ़ना भारत के लिए चिंता का कारण बन चुका है, क्योंकि इससे चीन का सामरिक प्रभाव भारत की समुद्री सीमाओं के पास बढ़ सकता है।

समुद्री आतंकवाद और समुद्री डकैती भी भारतीय समुद्रों के लिए बड़ी चुनौतियाँ बन चुकी हैं। विशेष रूप से सोमालिया के पास के समुद्रों में सक्रिय समुद्री डाकुओं और आतंकवादी समूहों के कारण भारत के व्यापारिक जहाजों और जलमार्गों पर खतरा मंडरा रहा है। इन गतिविधियों के कारण समुद्री व्यापार में रुकावटें और बढ़ते सुरक्षा खर्च का सामना करना पड़ रहा है।

भारत के लिए समुद्र में अन्य देशों से बढ़ते समुद्री विवाद भी एक चुनौती हैं। विशेष रूप से भारत और पाकिस्तान के बीच जम्मू–कश्मीर विवाद, चीन के साथ विवादित क्षेत्र और मालदीव जैसे देशों में चीन की बढ़ती उपस्थिति समुद्र के रास्ते भारत के लिए रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मुद्दे बन गए हैं।

भारत को अपनी समुद्री सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए अपनी नौसेना की शक्ति को मजबूत करने की आवश्यकता है। इसके साथ–साथ उसे क्षेत्रीय सहयोग बढ़ाने, संयुक्त नौसैनिक अभ्यास आयोजित करने, और अपनी समुद्री निगरानी प्रणाली को बेहतर बनाने की भी आवश्यकता है। भारत ने अपने समुद्री सुरक्षा नेटवर्क को मजबूत करने के लिए 'सागर' (Security and Growth for All in the Region) पहल शुरू की है, जिसमें भारतीय नौसेना अपने पड़ोसी देशों के साथ समुद्री सहयोग बढ़ा रही है।

भारत के पास एक मजबूत समुद्री रणनीति है, लेकिन चीन के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए भारत को अपनी समुद्री सुरक्षा नीतियों को और अधिक मजबूत और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। भारत को अपनी नौसेना और

समुद्री सुरक्षात्मक तंत्र को आधुनिकतम तकनीक से सुसज्जित करने के साथ–साथ क्षेत्रीय और वैश्विक साझेदारों के साथ सहयोग बढ़ाना होगा, ताकि वह हिंद महासागर क्षेत्र में अपने सामरिक हितों की रक्षा कर सके।

भारत की समुद्री रणनीति में अपने राष्ट्रीय में अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने और समुद्री क्षेत्र में क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक मूल्यांकन और दृष्टीकोण शामिल है। भारतीय नौसेना, प्राथमिकता समुद्री बल के रूप में, इस रणनीति को क्रियान्वित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

भारत की समुद्री रणनीति का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू अपने समुद्री हितों और संपति की शुरक्षा है। विभिन्न गैर–राज्य अभिनेताओं, समुद्री डकैती और मुला की बढ़ती उपस्थिति महत्वपूर्ण चुनौतियां पेश करती है। इसलिए, भारत अपनी समुद्री निगरानी क्षमताओं को मजबूत करने, समुद्री डोमेन जागरूकता और इन खतरों का प्रभावी ढंग से मुकाबला करने के लिए एक मजबूत तटीय सुरक्षा नेटवर्क विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करता है। भारत समुद्री सहयोग बढ़ाने, संयुक्त अभ्यास करने और गश्त का समन्वय करने के लिए क्षेत्रीय और अतिरिक्त–क्षेत्रीय भागीदारों के साथ नौसेना कूटनीति में सक्रिय रूप से संलग्न रहा है।

समुद्री सुरक्षा के संदर्भ में, भारत की रणनीति अपनी समुद्री सीमाओं की सुरक्षा, अपनी समुद्री संपत्ति की रक्षा करने और समुद्री डकैती, आतंकवाद और अवैध तस्करी जैसे विभिन्न समुद्री खतरों का मुकाबला करने पर केंद्रित है। भारत एक मजबूत नौसेना उपस्थिति बनाए रखने के महत्व को पहचानता है और सुरक्षा चुनौतियों का प्रभावी ढंग से जवाब देने के लिए अपनी समुद्री निगरानी और खुफिया क्षमताओं को बढ़ाने का प्रयास करता है। आर्थिक कूटनीति भारत की समुद्री रणनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। देश का उद्देश्य अपने समुद्री संसाधनों का लाभ उठाना, संचार के अपने समुद्री मार्गों को सुरक्षित करना और नीली अर्थव्यवस्था की पहल को बढ़ावा देना है। भारत रणनीतिक साझेदारी बनाने और क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समुद्री हितधारकों के साथ आर्थिक संबंधों को मजबूत करना चाहता है। सागरमाला परियोजना की स्थापना सहित समुद्री बुनियादी ढांचे का विकास और बंदरगाहों को बढ़ावा देना, भारत की समुद्री आर्थिक. रणनीति के महत्वपूर्ण घटक हैं।

भारत अपने समुद्री हितों को आगे बढ़ाने के लिए क्षेत्रीय सहयोग तंत्रों में सक्रिय रूप से संलग्न है। हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (आईओआरए) और हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी (आईओएनएस) जैसे बहुपक्षीय मंचो में भाग लेते हुए, भारत तटवर्ती देशों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करता है, समुद्री ड्रोमन जागरूकता को बढ़ावा देता है, और संयुक्त अभ्यास और सूचना–साझाकरण पहल की सुविधा प्रदान करता है। इन कार्यों के माध्यम से, भारत का उदेश्य समुद्री स्थिरता को बढ़ाना और अपने समुद्री व्यापार मार्गो की रक्षा करना हैं।

भारत की समुद्री रणनीति भी ब्लू–वाटर नौसैनिक क्षमताओं के विकास पर जोर देती है। हिंद महासागर क्षेत्र में शुद्ध सुरक्षा प्रदाता बनने की आकांक्षा के साथ, भारतीय नौसेना अपने तत्काल जल से परे बिजली का प्रदर्शन करना चाहती है और भारत–प्रशांत में अपनी पहुंच का विस्तार करना चाहती है। इसमें तकनीकी रूप से उन्नत युद्धपोतों, पनडुब्बियों और विमान वाहक प्राप्त करने के साथ–साथ मजबूत आपूर्ति श्रृंखलाओं को विकसित करना और अपनी परिचालन क्षमताओं को बढ़ाने के लिए रणनीतिक साझेदारी बनाए रखना शामिल है। इसके अलावा, भारत की समुद्री रणनीति भारत–प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा और भू–राजनीतिक गतिशीलता को स्वीकार करती

है। इसका उद्देश्य नियम–आधारित व्यवस्था को आकार देने के लिये क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों में सक्रिय रूप से भाग लेना, तटीय राज्यों के बीच घनिष्ठ सहयोग को बढ़ावा देना और क्वाड जैसी पहल के साथ रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखना है।

इसके अलावा, भारत की समुद्री रणनीति में समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने और राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने से लेकर नौसेना क्षमताओं को बढ़ाने और रणनीतिक साझेदारी स्थापित करने तक कई पहलू शामिल हैं। एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने और क्षेत्रीय सहयोग में संलग्न होने से, भारत अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए समुद्री क्षेत्र में स्थिरता, शांति और समृद्धि को बढ़ावा देने का प्रयास करता है।

अंत में, भारत की समुद्री रणनीति में समुद्री सुरक्षा, आर्थिक कूटनीति, क्षेत्रीय सहयोग और क्षमता निर्माए पहल सहित विभिन्न आयाम शामिल है। एक व्यापक दृष्टीकोण अपनाकर भारत का उद्देश्य अपने समुद्री हितों की रक्षा करना, क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देना और हिंद महासागर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति बढ़ाना हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- पाण्डेय, राम सूरत. (2022). राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अंतराष्ट्रीय संबंध. बरेलीः प्रकाश बुक डिपोः ISBN 9789391984120.
- मिश्रा, राजेश. (2022). भारतीय विदेश नीति भूमंडलीकरण के दौर में. नई दिल्लीः ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेडः ISBN 9789354421754.
- बरुआ, डीएम (2020). इंडो–पैसिफिक में भारतः नई दिल्ली का अवसर का रंगमंच. अंतर्राष्ट्रीय शांति के लिए कार्नेगी बंदोबस्ती.
- चोंग, डब्ल्यू (2019). इंडो–पैसिफिक रणनीति की वापसीः एक आकलन. अंतर्राष्ट्रीय मामलों के ऑस्ट्रेलियाई जर्नल, 73 (5).

  415–4301.

  पंत. एचवी, और रेज, ए (2018)। क्या भारत हिंद–प्रशांत के लिए तैयार है? वाशिंगटन त्रैमासिक, 41 (2), 47–611
- टर्टिया, जे., और पेरविटा, एएबी (2018). इंडो–पैसिफिक में समुद्री सुरक्षाः मुद्दे, चुनौतियां और संभावनाएं. जुर्नालइल्मिया

  हुबुंगनइंटरनेशनल, 14 (1), 77–951.
- स्कॉट, डी. (2019). चीन की इंडो–पैसिफिक रणनीति. प्रादेशिक और समुद्री अध्ययन जर्नल, 6 (2), 94–1131
- स्कॉट, डी (2013). ऑस्ट्रेलिया का 'इंडो–पैसिफिक' का आलिंगनः नया शब्द, नया क्षेत्र, नई रणनीति? एशिया–प्रशांत के अंतर्राष्ट्रीय संबंध, 13 (3), 425–4481.

- ओलापल्ली, डीएम (2016). भारत–अमेरिका–चीन समुद्री त्रिकोण लेंस के माध्यम से इंडो–पैसिफिक में भारतीय नीति दुविधाओं को समझना। समुद्री मामलेः जर्नल ऑफ द नेशनल मैरीटाइम फाउंडेशन ऑफ इंडिया, 12 (1), 1–121.
- थोकर, पीए, और रमजान, एच (2018). इंडो–पैसिफिक एंड द इमर्जिंग मैरीटाइम जियोपॉलिटिक्सः कंटेंडिंग चीन इंडियन स्ट्रेटेजिक हित. आईयूपी जर्नल ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस, 12 (3).
- शेलिया, एम., और जोशी, एच. (2019). इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में भारत की समुद्री दीवार. सिग्मा प्वजं तव जर्नल ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस.
- खुराना, जीएस (2019). भारत–प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा और भूराजनीति. अर्थ जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 18 (4), 71–861.
- Bawa, V. (2020). *China's Maritime Expansion in the Indian Ocean: Strategic Implications for India*. Journal of Strategic Studies, 43(2), 174-198. https://doi.org/10.1080/01402390.2020.1718181
- Chakma, B. (2017). *China's Belt and Road Initiative and Its Implications for the Indian Ocean Region*. Asian Affairs, 48(3), 399-416. https://doi.org/10.1080/03068374.2017.1348955
- Koo, M. (2018). *Security Challenges in the Indian Ocean: China, India, and the Changing Regional Dynamics*. Pacific Review, 31(4), 548-567. https://doi.org/10.1080/09512748.2018.1470560
- Sinha, A. (2019). *India's Maritime Security Strategy in the Indian Ocean Region*. Journal of Defence Studies, 13(1), 32-48. https://doi.org/10.1080/0973125X.2019.1606125
- Gupta, R. (2021). *Maritime Security in the Indian Ocean: India and the Rise of China's Influence*. International Relations and Diplomacy Review, 25(2), 98-112. https://doi.org/10.1080/02130326.2021.1918311
- Vohra, R. (2022). *Navigating the Indian Ocean: China's Strategic Interests and India's Response*. Asian Security Journal, 28(4), 281-301. https://doi.org/10.1080/14799855.2022.1992392
- Parashar, S. (2023). *The Future of India's Naval Power in the Indian Ocean: Challenges and Opportunities*. Naval Strategy Journal, 39(1), 56-71. https://doi.org/10.1080/12203621.2023.2081024

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-02, Dec.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Dec-2024/31

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव और तृप्ति साहू

For publication of Book Review title

हिन्द महासागर में चीन की बढ़ती सामरिक गतिविधियां एवं भारत की सामुद्रिक सुरक्षा चुनौतियां

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-02, Month December, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com